हाथ-कता बनाम मिलका कपड़ा

रजि० नं० बी ४४४८

हरिजनसेवक

दो आना

भाग १०

सम्पादक—प्यारेलाल

अंक ३८

मुद्रक और प्रकाशक
जीवणजी डाह्याभाभी देसाभी
नवजीवन मुद्रणालय, कालुपुर, अहमदाबाद

अहमदाबाद, रविवार, ता० २७ अक्तूबर, १९४६

वार्षिक मूल्य देशमें रु० ६,
विदेशमें रु० ८; शि० १४; डॉलर ३

हफ़्तेवार ख़त

घोर पागलपन

पिछले हफ़्ते मैंने गांधीजीके मन पर छाये जिस अँधेरेका ज़िक्र किया था, वह अिस हफ़्तेकी घटनाओंसे दूर नहीं हो सका। अेक बातचीतके दौरानमें अपनी हालतका ज़िक्र करते हुअे अुस दिन अुन्होंने कहा था—"मैं अपनेको बहुत टटोल कर देख रहा हूँ कि मैं कहाँ हूँ।" अुस दिनसे वे शामकी प्रार्थना-सभाकी अपनी तक़रीरोंमें बराबर अपने दिलके दर्दको अुँड़ेलते रहे हैं। पहले आसाममें बाढ़की तबाही आअी और हज़ारों लोग बेघर हो गये। लाखोंकी जायदाद बरबाद हो गअी और कअी लोग मर गये। वह अीश्वरकी लीला थी। लेकिन आसामसे भी ज़्यादा बुरी ख़बरें बंगालसे आअीं, जहाँके कुछ लोगों पर पागलपनका नशा छा गया है। वहाँ अिनसान खूँख़्वार जानवरोंसे भी नीचे गिर गया है। अख़बारोंमें अैसी रिपोर्टें आ रही हैं कि वहाँ मुसलमान हिन्दुओं पर, जो बहुत कम तादादमें हैं, हमला कर रहे हैं। जबसे अुन्होंने नाआखालीकी बातें सुनी हैं, तबसे वे बहुत ज़ोरोंसे अिसी सोचमें पड़े हैं कि आखिर अिस बारेमें अुनका क्या फ़र्ज़ है? भगवान् अुन्हें रास्ता दिखायेगा। वे जानते हैं कि जहाँ तक अहिंसाके अुपदेशका सवाल है, लोगोंके दिलों पर अब अुसका कोअी असर नहीं रह गया है। फिर भी लोग अुन्हें दिलसे चाहते हैं। अिस प्यार और मुहब्बतके लिअे वे लोगोंके अेहसानमन्द हैं, और अुन्हें धन्यवाद देते हैं। लेकिन अपनी तारीफ़ और धन्यवादको वे अिसी तरह ज़ाहिर कर सकते हैं कि अुन लोगोंके सामने और अुनके ज़रिये सारी दुनियाके सामने वे अुस सचाअीको रख दें, जिसके लिअे अुन्होंने अपनी सारी ज़िन्दगी लगा दी है और जो अीश्वरसे अुन्हें मिली है। अैसा करने में अगर अुन्हें लोगोंके प्यार और अुनकी दी हुअी अिज़्ज़तसे हाथ धोना पड़े, तो भी कोअी परवाह नहीं। आज तो वे लोगोंसे यही कहना चाहते हैं कि पूरबी बंगालमें नोआखाली और दूसरी जगहोंमें जो हुआ, अुसका बदला लेनेकी बात सोचना हिन्दुओंके लिअे ग़लत होगा। अहिंसा कांग्रेसका धर्म है। अुसीने आज अुन्हें यह ताक़त दी है। लेकिन अगर हम शक्तिशाली ब्रिटिश हुकूमतके ख़िलाफ़ ही अुसका अिस्तेमाल करें, और अपने भाअियोंके साथ खुलकर हिंसाका बरताव करें, तो हमारी अहिंसा कायरोंकी अहिंसा मानी जायगी। गांधीजी यह नहीं मानते कि हिन्दुस्तानी कभी हिंसाको अपना धर्म बना सकते हैं। हालाँ कि कांग्रेसमें हिन्दू मेम्बरोंकी तादाद बहुत ज़्यादा है, फिर भी कांग्रेस हिन्दुओंकी संस्था नहीं है। गांधीजीने पं० जवाहरलाल नेहरूके बाद कांग्रेसकी बागडोरको सँभालनेवाले नये राष्ट्रपति आचार्य कृपालानीसे कहा था—"कांग्रेसकी गादी आपके लिअे आरामकी गादी साबित नहीं होगी। अगर कैबिनेटके प्रधान-मंत्रीको काँटोंका ताज पहनना पड़ा है, तो कांग्रेसके सदरको भी काँटोंके बिछौने पर ही लेटना होगा। मरहूम सर सैयद अहमदने हिन्दुओं और मुसलमानोंको हिन्दुस्तानकी दो आँखें कहा था। कांग्रेसका प्रेसिडेण्ट भी अिन दोनोंमें कैसे कोअी फ़र्क़ कर सकता है? अुसने दोनोंकी अेक-सी ख़िदमत करनेका व्रत लिया है। अिसलिअे आपको शान्ति या अमनका सन्देश लेकर पूरबी बंगाल जाना चाहिये और वहाँके लोगोंको बिना मारे मरनेकी कला सिखानी चाहिये। लोगोंके सामने अपनी निजकी मिसाल पेश करके ही आप लोगोंको यह सिखा सकते हैं।" अपनी पत्नीके साथ आचार्य कृपालानी वहाँ किसी अेक पार्टीको बचानेके लिअे, नहीं, बल्कि भाअी-भाअीके बीचकी अुस खूँरेज़ीको बन्द करनेके लिअे जा रहे हैं, जिसके सारे हिन्दुस्तानमें फैल जानेका अँदेशा बढ़ रहा है। आचार्य कृपालानी और अुनकी पत्नीके लिअे यह अच्छी शुरूआत है। स्वर्गीय सुभाषबाबूके भाअी शरद्बाबू अुन लोगोंके साथ जा रहे हैं। वे जात-पाँत या मज़हबके बन्धनोंसे परे हैं। कुछ साल पहले गांधीजी शरद्बाबूके घर ठहरे थे। तब अुन्हें पता चला था कि सुभाषबाबू शरद्बाबूकी कितनी अिज़्ज़त करते थे।

गांधीजीने कहा—"आज बंगालके अुजले नाम पर कालिख पोती जा रही है—वह बंगाल, जिसने हिन्दुस्तानको जितना दिया है, वह बंगाल, जो गुरुदेवका घर है! गुरुदेवका अेक भजन अभी आपने सुना ही है। अुस भजनमें अीश्वरसे माँगा गया है कि वह अपने भक्तोंके दिलको अुदार बनाये और अुन्हें हिम्मत दे। अिसीको गुनगुनाते हुअे वे लोग बंगालको जा रहे हैं। आप लोगोंका यह फ़र्ज़ है कि आप अुन लोगोंकी सफलताकी कामना करें।"

मुस्लिम लीगसे दो शब्द

आगे चलकर गांधीजीने कहा—"मुस्लिम लीगसे मेरी प्रार्थना है कि वह अपने दिलको टटोले। अुसने आरज़ी सरकारमें शामिल होनेका फ़ैसला किया है। मुझे अुम्मीद थी कि वह सरकारमें भाअी-भाअी जैसे मिलकर काम करनेके लिअे आ रही है। अगर अैसा ही होता, तो सबका भला होता। मगर लीगवाले कांग्रेससे समझौता करके तो कैबिनेटमें नहीं आये। तब क्या वे दुश्मनी करनेके लिअे आ रहे हैं? मैं लीगसे और अुसकी वर्किंग कमेटीसे पूछता हूँ कि क्या अिस्लाम यही सिखाता है? आज पूरबी बंगालमें जो कुछ हो रहा है, वह हिन्दुस्तानके दूसरे सूबोंमें भी फैल जाय, तो क्या हाल होगा? क्या पाकिस्तानका यह मतलब है कि जहाँ हिन्दू कम हों, वहाँ मुसलमान अुन्हें खतम कर डालें, और जहाँ मुसलमान कम हों, वहाँ हिन्दू अुनका खातमा कर दें? अगर अैसा हुआ, तो हिन्दुस्तान, हिन्दू धर्म और अिस्लामकी क़ब्र बन कर रहेगा। हिन्दुस्तानके टुकड़े करना हो, तो समझा-बुझा कर करें। पाकिस्तानके लिअे लड़ना ही है, तो शराफ़तसे लड़ें। जिन्ना साहबने कहा है कि जब पाकिस्तान बनेगा, तो हम यह दिखा देंगे कि अल्पमतवालों (माअिनॉरिटीज़)के साथ कैसा अिन्साफ़ किया जाता है। क्या पूरबी बंगालमें जो हो रहा है, वही अुसका नमूना है? पूरबी बंगालमें तो पाकिस्तान है ही। वहाँ मुसलमान ७५ फ़ी सदी और हिन्दू २५ फ़ी सदी या अुससे भी कम हैं। वहाँ मुसलमान जो चाहें, कर सकते हैं। मगर पूरबी बंगालमें वे जा कर रहे हैं, वह पाकिस्तानके लिअे बुरा शगुन है। तो क्या हिन्दू अिसका बदला लें? बदला लेना हैवानियत है। मेरा

www.vinoba.in

तो यह कहना है कि हिन्दू और मुसलमान खुदाको हाजिर-नाजिर समझकर कसम खायें कि वे अेक-दूसरेका बाल भी बाँका न होने देंगे। अैसा न हो तो कैबिनेटमें कांग्रेस और लीग क्या दुश्मन बन कर ही रहेंगे? हिन्दुस्तानका राज चलाने लायक़ हम तभी बन सकेंगे, जब हम हैवानियतको भूल जायँ और अिनसानियत सीखें।"

टेढ़ा तरीक़ा

गांधीजीको अुम्मीद थी कि लीग कैबिनेटमें आयेगी तो अुसका नतीजा मुल्कके लिअे अच्छा होगा। मगर जब लीगके नामोंकी फ़ेहरिस्त सामने आअी, तो अुसमें अेक हरिजनका नाम देखकर अुन्हें सदमा पहुँचा। पिछले बुधवारको शामकी प्रार्थना-सभामें अुन्होंने कहा — "मेरे-जैसे आदमीको तो अिस बातसे खुश होना चाहिये कि कैबिनेटमें हरिजनोंको अेक और सीट मिली। मगर मैं अैसा कहकर अपने-आपको और जिन्ना साहबको धोखा नहीं देना चाहता। जिन्ना साहब कहते हैं कि हिन्दू और मुसलमान अलग-अलग राष्ट्र (नेशन) हैं। लीग सिर्फ़ मुसलमानोंकी संस्था है। तब अुनका नुमाअिन्दा हरिजन कैसे हो सकता है? लीग सीधे रास्तेसे कैबिनेटमें नहीं आअी है। मैं नहीं मानता कि अपने ५ अुम्मीदवारोंके कोटेमें अेक हरिजनको शामिल करके लीगने सच्ची अुदारतासे काम लिया है। पूरबी बंगालकी खबरें पढ़कर तो अैसा बिलकुल नहीं लगता। मुझे शक होता है कि क्या लीग कैबिनेटमें भी लड़नेके लिअे ही आ रही है? हिन्दुस्तानका जो थोड़ा-सा राज-काज हमारे हाथमें आया है, क्या अुसे भी वह बिगाड़ेगी? भगवान् करे, मेरा डर झूठा साबित हो! लीगवाले भाअीकी तरह मिलकर काम करें, और किसीको अुनके खिलाफ़ शिकायतका मौक़ा न मिले। मुझे अुम्मीद है कि जो हरिजनभाअी कैबिनेटमें आ रहे हैं, वे हिन्दुस्तानके सच्चे सपूत और सेवक साबित होंगे।"

औरतोंकी कसौटी

अेक दूसरे मौक़े पर गांधीजीने कहा — "पूरबी बंगालमें जो कुछ हो रहा है, वह कलकत्तेसे भी बदतर है। वहाँ कुछ लोगोंको मार डाला गया, अिसकी मुझे परवाह नहीं। महत्त्वकी बात यह है कि वे कैसे मरे — लाचारीसे या बहादुरीसे? अपने भाअीके हाथ मरनेसे बढ़कर चीज और क्या हो सकती है, बशर्ते कि हम बहादुरीसे मरें। २५ मुसलमान ५ हिन्दुओंको मार डालें, या बहुतसे हिन्दू मिलकर चन्द मुसलमानोंको क़त्ल कर डालें, यह तो निरी डरपोकपनकी बात है। मगर मरनेवाले बहादुर बनकर अपना सिर अूँचा रक्खें, सामनेवालेको मारनेकी ख्वाहिश भी न करें और मर जायँ, तो अिससे बड़ी कोअी बहादुरी नहीं। लेकिन अुन औरतोंका क्या, जिन्हें भगाकर जबरन् मुसलमान बनाया जा रहा है? किसीके बनानेसे न कोअी मुसलमान बनता है, न हिन्दू, न अीसाअी। लेकिन हिन्दुस्तानी औरतें अपने-आपको अितनी बेबस क्यों समझें? क्या बहादुरी मर्दोंका ही अिजारा है? औरतोंके हाथमें आम तौर पर तलवार नहीं रहती। झाँसीकी रानीके हाथमें तलवार थी, और तलवारके जौहरमें वह अपने जमानेके सब लोगोंसे आगे बढ़ गअी थी। लेकिन सभी औरतें झाँसीकी रानी नहीं बन सकतीं। फिर भी अुन्हें भगाकर लेजानेवालोंको वे यह जरूर कह सकती हैं कि न तुम हमें मुसलमान बना सकते हो, न अपने घरोंमें डाल सकते हो। मरनेका अिल्म तो सब जानते हैं। सीता अेक दुबली-पतली और निरपराध स्त्री थी, लेकिन महाबली रावण भी अुसका कुछ नहीं बिगाड़ सका।"

गांधीजीने आगे चलकर कहा — "सीताकी मिसालको हम क़िस्से-कहानीकी बात कहकर अुड़ा न दें। मैंने मिस ओलिव डोकको देखा है। वह अकेली जंगली हब्शियोंके बीच रहती थीं। किसी अुनकी तरफ़ आँख तक अुठानेकी हिम्मत नहीं की। मैं हिन्दुस्तानकी औरतोंमें अैसी ही सात्विक हिम्मत देखना चाहता हूँ। आज पूरबी बंगालमें फ़ौज औरतोंको बचानेकी कोशिश कर रही है। लेकिन जिन्हें भगा लिया गया है, या जो फ़ौज या पुलिसकी हिफ़ाजतके बावजूद भी भगाअी जा सकती हैं, अुनका क्या? अुन्हें अपनी हिफ़ाजत खुद करनी होगी। अुसका अेक ही अचूक रास्ता है — मरनेकी कला सीखना। जिसे मरना ही है, वह अपनी जीभ काटकर या साँस रोक कर भी मर सकता है।"

बेअिज़्ज़तीसे मौत भली

गांधीजीकी अिस बातको सुन कर डॉ० सुशीला नय्यरने अुनसे कहा कि जीभ काटकर या साँस रोककर मरना मुमकिन नहीं। दूसरे दिन सुबह गांधीजीसे मिलते वक़्त डॉ० विधानचन्द्र रायने डॉ० सुशीला नय्यरकी बातकी ताअीद की। डॉक्टरी मतसे तत्काल प्राण-त्यागके लिअे तेज़ जहर ही अेक अिलाज हो सकता है। दूसरे दिन शामकी प्रार्थना-सभामें अिसका जिक्र करते हुअे गांधीजीने कहा — "अगर मरनेका सीधा रास्ता जहर ही हो, तो मैं कहूँगा कि बेअिज़्ज़ती करानेकी बनिस्बत जहर खाकर मर जाना बेहतर है। मगर मैं योग जाननेवालोंसे अिस बारेमें दरयाफ़्त करूँगा। मेरा खयाल है कि जहरके सिवा भी मरनेका रास्ता होना चाहिये। हमने अपनी लड़कियोंको बेबसीकी तालीम दी है। हमने अुन्हें सिखाया है कि अुनकी हिफ़ाजत अपने पतिके साथ या चिता पर ही हो सकती है। अगर अिस तरह हिन्दुस्तानके ४० करोड़ लोगोंमेंसे आधे बेबस बन जायँ, तो सच्ची आजादी आ नहीं सकती। औरतोंके दिल में यह यक़ीन होना चाहिये कि अपनी अिज़्ज़त बचानेवाली वे खुद हैं। जिसने मौतके डरको जीत लिया है, अुसकी बेअिज़्ज़ती कौन कर सकता है? जिन्हें खंजर रखना हो, वे भले खंजर रक्खें। लेकिन खंजरसे अेक-दोका सामना किया जा सकता है, सैकड़ोंका नहीं। खंजर तो कमजोरीकी निशानी है। आखिरकार जान पर खेल जानेकी तैयारी ही हर हालत में औरतोंकी अिज़्ज़त बचा सकती है। और कुछ न कर सकें तो वे अपने जेब में जहर ही रक्खें। जहर खाकर मरना नैतिक पतन से कहीं अच्छा है।

"अेक मुसलमान भाअी लिखते हैं कि जब मुसलमान ज़्यादती करते हैं, तो मैं अुनकी निन्दा करता हूँ। लेकिन जब हिन्दू ज़्यादती करते हैं, तो मैं चुप रहना ही अच्छा समझता हूँ। यह सरासर गलत है। मेरे लिअे तो हिन्दू-मुसलमान सभी सगे भाअी-जैसे हैं।"

✓ खादीका विकेन्द्रीकरण

चरखा-संघकी पिछली बैठकमें कअी मसलों पर जो बहस हुअी, अुसके बारेमें पिछले हफ़्ते मैंने काफ़ी लिखा है। अुस बैठकमें अिस सवाल पर भी बहस हुअी कि संघकी सत्ता मुक़ामी खादी संस्थाओंको दे दी जाय। यह सुझाव पेश किया गया कि हर जगह मुक़ामी समितियाँ ही खादीकी नीति तय करें, और ये समितियाँ केन्द्रीय (मरकज़ी) संघसे पूरी तरह आजाद हों। गांधीजी खादीके कामका और जिम्मेदारीका विकेन्द्रीकरण तो चाहते हैं, मगर हर जगह खादी कार्यकर्त्ताओंके बदले आम लोगोंकी समितियाँ बनाना अुन्हें पसन्द नहीं। "खादीके कामको बढ़ानेके लिअे होशियार कारीगरों, विशेषज्ञों और व्यापार-बुद्धिवाले सेवाभावी लोगोंकी जरूरत है। अुसमें अपनी महत्त्वाकांक्षाओंको या सत्ता पानेकी ख्वाहिशको कोअी जगह नहीं। कांग्रेसमें सत्ता पानेकी ख्वाहिश घुस आअी है। मेरी निगाहमें कांग्रेससे अिस गन्दगीको निकालनेका अेक ही रास्ता है। वह यह कि कांग्रेस काम करनेवाले लोगोंकी संस्था बने। खादीके काममें लोकसत्ता या जमहूरियतके अुसूलको दाखिल करनेसे खादी खतम हो जायगी। कांग्रेसकी तरह चरखा-संघ लोकसत्ताक (डेमॉक्रेटिक) संस्था नहीं है। चरखा-संघ कांग्रेसकी बनाअी हुअी संस्था है, और जमहूरियत या लोकसत्ताका निर्माण करनेके लिअे बनाअी गअी है। बैंक ऑव् अिंग्लैण्डके

www.vinoba.in

डाअिरेक्टरेट या प्रबन्धक मंडलकी तरह संघ हर तरहसे अेक व्यापारी संस्था है । फ़र्क़ सिर्फ़ अितना है कि अिसका मक़सद मुनाफ़ा कमाना नहीं, लोगोंकी सेवा करना है । किसी लोकसत्ताक संस्थाकी व्यापारी शाखाका काम कभी आम लोगोंके वोटसे नहीं चल सकता ।

"हमें देहातमें फैल कर लोगोंकी खिदमत करनी है । खादी-सेवक अिसके अलावा कोअी दूसरी सत्ता जमा कर काम करना चाहेगा, तो खादीको मार डालेगा ।"

अेक दोस्तने पूछा — "खादीको आम अिस्तेमालकी चीज़ बनानेके लिअे हमें सबका सहयोग तो चाहिये न?"

गांधीजीने जवाब दिया — "खादीका काम करनेवालोंको लोगोंका खिदमतगार बनना है । अगर अुनमें थोड़ी भी क़ाबलीयत होगी, तो अपने-आप लोगों पर अुनका असर पड़ेगा और लोग अुन्हें सहयोग देंगे । लोगोंकी समितियाँ कामको आगे बढ़ानेके बजाय अुसमें रुकावट डालनेवाली साबित हो सकती हैं । लेकिन सेवाके जरिये खादीके जो हिमायती पैदा होंगे, वे बहुत मददगार साबित होंगे ।"

दूसरा सवाल यह पूछा गया — "विकेन्द्रीकरणके बाद चरखा-संघकी क्या सत्ता होगी?"

गांधीजीने फ़ौरन जवाब दिया — "अुस हालतमें संघकी सत्ता सिर्फ़ नैतिक या अिख़लाक़ी होगी । वह सत्ता आजसे ज़्यादा पुरअसर होगी । चरखा-संघ रुपया नहीं देगा, व्यापार नहीं करेगा, लेकिन खादीके कामको नैतिक बल देकर अुसका रास्ता आसान करेगा । वह खादीका काम करनेवालोंको अपने नामका अिस्तेमाल करने देगा, मगर अुन पर अपनी हुकूमत नहीं लादेगा । जो अुसकी नीति मान लेंगे, अुन्हें संघका नैतिक बल मिलेगा । चरखा-संघके पास आज जो पूँजी है वह अुसकी जो शाखा आज़ाद होना चाहे, या आज़ाद होने लायक़ समझी जाय, अुसे मिल सकती है । शर्त यही है कि वह अुस पूँजीका ठीक ढंगसे अिस्तेमाल करनेकी गारण्टी दे और अेक तयशुदा मुद्दतके बाद अुसे लौटा दे । चरखा-संघको हक़ होगा कि वह समय-समय पर अुसके कामको देखे, मगर यह भी अुस आज़ाद युनिट या शाखाकी राज़ी-रज़ामन्दीसे ही किया जायगा ।"

नअी दिल्ली, १८–१०–'४६ प्यारेलाल
(अंग्रेज़ीसे)

ग़लत बायकाट का सामना कैसे करें ?

मरकारा (कुर्ग)से अेक भाअीने पूछा है कि कअी नौजवान सुधारक गाँवके देवोंके नाम पर की जानेवाली जानवरोंकी क़ुरबानियोंमें विश्वास नहीं करते, अिसलिअे गाँववालोंने अुनका बायकाट करनेकी धमकी दी है । अैसी हालतमें अुन सुधारकोंको क्या करना चाहिये?

दुनियामें कहीं भी सुधारकोंका काम आसान नहीं होता । अुन्हें बायकाटकी धमकीसे डरना नहीं चाहिये । बायकाटकी वजहसे होनेवाली दिक़्क़तोंके लिअे अुन्हें तैयार रहना चाहिये, और अुन्हें खुशी-खुशी सहना चाहिये । किसी हालतमें अुन्हें अुन गाँववालों पर नाराज़ नहीं होना चाहिये, जो अन्धी श्रद्धावाले रिवाजोंको सचाअीके साथ मानते हैं । असलमें तो यह लोगोंकी सच्ची तालीमका सवाल है । गाँवके अिन देवताओंकी हस्ती गाँववालोंके दिमाग़के सिवा और कहीं नहीं होती । चुनाँचे, सुधारकोंको चाहिये कि वे बायकाटकी परवाह किये बग़ैर गाँववालोंको समझानेकी कोशिशमें लगे रहें, और साथ ही अुनकी ज़रूरी खिदमत भी करते रहें । अपने सामने पड़नेवाली दिक़्क़तों और मुसीबतोंके पहाड़ोंको सुधारक सब्र और लगन से ही पार कर सकते हैं । वे गाँववालोंके खिलाफ़ पुलिसकी मदद कभी न लें ।

नअी दिल्ली, १८–१०–'४६
(अंग्रेज़ीसे) मो० क० गांधी

www.vinoba.in

अखिल भारत-चरखा-संघके प्रस्ताव

१. अखिल भारत-चरखा-संघको अपने अनुभवसे विश्वास है कि हिन्दुस्तानमें और दुनियाके मलाया आदि जैसे दूसरे मुल्कोंमें कपड़ेकी कमीके कारण जो स्थिति अुत्पन्न हो गअी है, वैसी स्थिति कहीं भी न होने देनेका साधन चरखा और हाथ-करघा है । अकेला हिन्दुस्तान ही अैसा देश है, जहाँ पुराने ज़मानेसे हाथ-कताअी और हाथ-बुनाअीसे खादी बनती आअी है, और कपड़ेकी मिलोंकी बहुतायत होने पर भी अखिल भारत-चरखा-संघ द्वारा शुद्ध खादी तैयार हो रही है । चरखा-संघके क़रीब २५ सालके कार्यकालमें लगभग ७ करोड़ रुपया देशकी ग़रीब कत्तिनों और बुनकरोंमें बाँटा गया है ।

२. जो सरकारें ग्रामोद्योगकी आर्थिक योजनाको महत्त्व देकर खादीका काम करना चाहती हैं, अुनके लिअे नीचे लिखी बातोंकी व्यवस्था करना निहायत ज़रूरी है–

(क) अेक पंचवर्षीय योजना बनाकर अपने-अपने प्रान्तकी सब प्राथमिक तथा मिडिल पाठशालाओं और नॉर्मल स्कूलोंमें विद्यार्थियोंको कताअी सिखानी चाहिये, और हरअेक पाठशालामें हाथ-सूत बुननेका कम-से-कम अेक करघा ज़रूर चलना चाहिये । शालाओंमें बुनियादी तालीम जल्दी-से-जल्दी और बड़े-से-बड़े पैमाने पर शुरू होनी चाहिये ।

(ख) बहुधन्धी सहकारिता समितियाँ स्थापित करके अुनके द्वारा ग्राम-सुधारके अंगभूत खादीका काम करना चाहिये ।

(ग) जहाँ कहीं कपासकी खेती नहीं होती, वहाँ कपास पैदा करनेकी व्यवस्था करनी चाहिये, और अैसा प्रबन्ध होना चाहिये कि कातनेवालोंको रूअी, कपास और दूसरा सामान सुविधासे मिल सके ।

(घ) खादी-विशारद तैयार करने चाहियें । खादीके काममें सुधार करना चाहिये ।

(च) ग्रामोत्थानके काममें कताअीका किसी-न-किसी प्रकार सम्बन्ध आयेगा ही, अिसलिअे सरकारके सहकारिता, शिक्षा और कृषि-विभागों, डिस्ट्रिक्ट और म्युनिसिपल बोर्डों और ग्राम-पंचायत आदिके सब कर्मचारियोंको खादी-प्रवेश-परीक्षा पास कर लेनी चाहिये, और अिस परीक्षाको नये सिरेसे पास किये बिना किसीको अिन विभागोंकी नौकरीमें नहीं लेना चाहिये ।

(छ) हाथ-करघे पर मिलके सूतसे बने हुअे कपड़ेके मूल्य पर नियंत्रण होना चाहिये ।

(ज) अप्रमाणित खादीका व्यापार खादीके नाम पर नहीं करने देना चाहिये ।

(झ) सरकारी टेक्सटाअिल विभाग और बुनाअीशालाओंमें केवल हाथ-कते सूतको स्थान मिलना चाहिये । जेलोंमें कताअी-बुनाअी चलनी चाहिये ।

३. प्रान्तीय सरकारों और देशी रियासतोंसे अपील की जाती है कि वे दूसरी बातोंके साथ-साथ अूपर लिखी बातें करके खादीको व्यापक बनानेकी कोशिश करें । अिस कामको अंजाम देनेमें चरखा-संघ और अुसकी शाखायें भरसक मदद देनेको तैयार हैं ।

४. मिल-मालिकोंसे प्रार्थना की जाती है कि वे अिस ज़रूरी काममें मदद दें । चरखा-संघकी सलाहसे सरकारों और मिलों द्वारा अैसी व्यवस्था होनी चाहिये कि जिस प्रदेशमें कताअी-बुनाअीका काम हो सके, वहाँ मिलका कपड़ा न भेजा जाय । अिसके अलावा, नअी मिलें न बनाअी जायँ, और पुरानी मिलोंमें कताअी और बुनाअीके नये साँचे न लाये जायँ । मिलोंका कार-बार चरखा-संघ और सरकारकी सलाहके मुताबिक़ चलाया जाय । अिस कामके लिअे सरकार ज़रूरी क़ानून पास करे, और उस पर अमल करे । देशमें किसी क़िस्म का परदेशी सूत और कपड़ा क़तअी न आने पाये । मिल-मालिकोंसे यह भी अनुरोध किया जाता है कि वे करोड़ोंके अिस काममें मदद करें और प्रजाका साथ दें ।

नअी दिल्ली, १०–१०–'४६

हरिजनसेवक
२७ अक्तूबर १९४६

हाथ-कता बनाम मिलका कपड़ा

मद्रासकी चेम्बर ऑव् कॉमर्स (व्यापारी-मंडल) जैसी पूँजीपतियोंको फ़ायदा पहुँचानेवाली बड़ी जमातें और वहाँके कुछ कांग्रेसी भी, सूबेके वज़ीरे आज़मके खिलाफ़ हो गये हैं। मद्रासके अखबारोंकी कअी कतरनें मेरे पास भेजी गअी हैं। कहते हुअे अफ़सोस होता है कि यह नुकताचीनी मुझे स्वार्थ और नासमझीसे भरी हुअी मालूम होती है।

अिस झगड़ेमें मेरा नाम भी घसीटा गया है। चूँकि मैं प्रकाशमूजीकी स्कीम (योजना)का समर्थक हूँ, अिसलिअे अिस सीधे-सादे सवालकी निष्पक्ष बहस पर कोअी असर नहीं पड़ना चाहिये।

सवाल सिर्फ़ यह है — अगर मद्रास सरकार नअी मिलोंके खुलनेमें बढ़ावा दे, या पुरानी मिलोंको अपनी मशीनें बढ़ाकर दुगना माल पैदा करनेमें मदद दे, तो क्या खादी आम जनतामें फैल सकेगी? क्या गाँववालोंको अितना भोला समझ लिया गया है कि अेक खास लम्बाअीका कपड़ा बुननेके लिअे जितनी क़ीमतके कपासकी जरूरत होती है, अुससे भी कम क़ीमत पर अुन्हें मिलका कपड़ा बेचा जाय, तो वे अितनी सी बात भी नहीं समझेंगे कि यह खादीके साथ महज खिलवाड़ किया जा रहा है? जब जापानने अपना कपड़ा हिन्दुस्तान भेजा था, तब अैसा ही हुआ था।

अिसमें कोअी शक नहीं कि मद्रासवाली योजना अिसी गरजसे बनाअी गअी है कि किसान अपने खाली वक़्तमें कताअी करके अपने पहनने लायक़ कपड़ा खुद तैयार कर लिया करें। लोग अपने खाली वक़्तको अुपयोगी, राष्ट्रीय और प्रामाणिक मेहनतमें खर्च करें, अिस बातके लिअे अुन्हें समझाना क्या निरा शेखचिल्लीपन है?

जब बेकारोंके लिअे अेक अुपयोगी और ज़्यादा फ़ायदेमन्द कामकी कोअी अमली योजना सामने आयेगी, अुस वक़्त मद्रास सरकारके खिलाफ़ आवाज़ अुठाना मुनासिब होगा। जो लोग सचाअीके साथ मुल्ककी सेवा कर रहे हैं, अुन्हें आदर्शवादी, पागल या धुनी कहकर अुनकी बात पर ग़ौर करनेसे अिनकार करना दिलबहलावका कोअी अच्छा जरिया नहीं।

पूँजीपतियों और समाजमें अपनी जगह बनाकर बैठे हुअे लोगोंको चाहिये कि वे ग़रीब देहातियोंके खिलाफ़ न खड़े हों और अुन्हें वाअिज़्ज़त मेहनत करके अपनी बेहालीको सुधारनेसे न रोकें।

मद्रासवाली योजनामें नअी मिलोंके बारेमें जो अेक भारी भूल रही थी, अुसे मैंने पकड़ लिया था। जब टेक्सटाअिल-कमिश्नरको दोनों चीजें (चरखा और मिल) अेक साथ चलानेकी ग़लती जँच गअी और चरखा-संघकी तैयार की हुअी योजनाका अमलीपन अुनकी समझमें आ गया,तो अुन्होंने मद्रास-सरकारसे अुसकी सिफ़ारिश की। अगर यह योजना अमली या कारआमद साबित न हुअी, तो अुससे टेक्सटाअिल कमिश्नरकी ही नेकनामीको धक्का लगेगा, नुकताचीनी करनेवालोंको नहीं।

यह अेक प्रजातंत्री (जमहूरी) सरकारका आम जनताकी भलाअीके लिअे अुठाया गया क़दम है।

अिसलिये जहाँ यह योजना अमलमें लाअी जाय, कम-से-कम वहाँके लोगोंको तो अिसे जरूर अपनाना चाहिये।

वह अेक आदमीकी स्कीम न होकर पूरी सरकारकी स्कीम हो।

अुसके पीछे धारासभा या अेसेम्ब्लीका पूरा जोर हो।

अुसमें जबरदस्तीकी बू भी न आनी चाहिये।

वह दरअसल अमलमें आने लायक़ और आम जनताके लिअे फ़ायदेमंद होनी चाहिये।

योजनाकी कामयाबीकी ये सब शर्तें लिख ली गअी हैं। मैं समझता हूँ कि विशेषज्ञोंसे और आपसमें पूरी बहस करनेके बाद ही मद्रास-सरकारने अिन्हें ज्यों-का-त्यों मान लिया है।

याद रहे कि मद्रासकी मौजूदा मिलोंको अभी नहीं छुआ जायगा। अगर किसी दिन यह योजना जंगलकी आगकी तरह फैली, और मुझे अुम्मीद है कि अैसी चीज किसी दिन जरूर सब जगह फैल जायगी, तब अिसमें कोअी शक नहीं कि समूचे मिल-अुद्योग पर अुसका असर पड़ेगा। अगर अैसा दिन कभी आये, तो बड़े-से-बड़े सरमायादारको भी अुसके न आनेकी ख्वाहिश नहीं करना चाहिये।

तब ग़ौर करने लायक़ सवाल सिर्फ़ यह रह जाता है कि मद्रास सरकार अीमानदार और लायक़ है या नहीं। अगर वह नहीं है, तो हर चीज गड़बड़ होगी। और अगर वह अीमानदार और लायक़ है, तो यह योजना जरूर क़ामयाब होगी और अिसे सबकी दुआयें मिलेंगी।

नअी दिल्ली १७-१०-'४६
(अंग्रेजीसे)

मोहनदास करमचंद गांधी

हिंसा के तरीके

सीधी लकीर अेक ही होती है। अहिंसा अेक सीधी लकीर है। जो लकीरें सीधी नहीं, वे कअी तरह की होती हैं। जिस बच्चे ने क़लम पकड़ना सीख लिया है, वह और कितनी ही तरह की लकीरें चाहे खींच ले, मगर अेक सीधी लकीर नहीं खींच सकता। धोखे से अेक आध बार सीधी बन जाय तो बात दूसरी है। कअी लोग पूछते हैं कि मैंने जिस हिंसा की अिजाजत दी है, क्या अुसमें वे सब बातें आ सकती हैं, जिनका वे अपने खत में जिक्र करते हैं। यह अजीब बात है कि सभी खत अंग्रेजी में लिखे हुअे हैं। अिन लिखनेवालों को मेरा लेख दुबारा पढ़ जाना चाहिये। तब अुन्हें मालूम हो जायगा कि क्यों मैं अिन सवालों का जवाब नहीं दे सकता। शायद मैं अिसलिअे भी जवाब देने लायक़ नहीं हूँ कि मैंने कभी हिंसा की ही नहीं। असल में तो मैंने कभी हिंसाकी अिजाजत भी नहीं दी। मैंने बहादुरी और डरपोकपन के दो दरजोंका ही बयान किया है। क़ानूनी चीज तो अहिंसा ही है। यहाँ सुझाये गये अर्थ में हिंसा कभी जायज़ नहीं हो सकती — यानी अिनसानके बनाये क़ानून की रूसे नहीं, बल्कि अिनसान के लिअे क़ुदरत के बनाये क़ानून की रू से हिंसा कभी क़ानूनी नहीं हो सकती। अपने या किसी निराधार के बचाव के लिअे जो हिंसा की जाती है, वह भी वैध या क़ानूनी तो नहीं होती, फिर भी वह अेक बहादुरी का काम जरूर है, जो डर कर शरण जाने से कहीं अच्छा है। डरपोकपन किसीको शोभा नहीं देता — न आदमी को, न औरत को। हिंसा में भी बहादुरी की कअी क़िस्में और कअी दरजे होते हैं। हरअेक आदमी को अिसका फ़ैसला खुद करना चाहिअे। दूसरा कोअी न तो कर सकता है, न अुसे करने का हक़ है।

नअी दिल्ली, १८-१०-'४६
(अंग्रेजीसे)

मोहनदास करमचंद गांधी

www.vinoba.in

ब्रजकिशोर बाबू

अेक लम्बी बीमारीके बाद ब्रजकिशोर बाबू की मृत्युसे गांधीजीके पुराने सत्याग्रही साथियोंमेंसे अेक कसा हुआ और मँजा हुआ साथी चला गया। अुनका नाम हिन्दुस्तानमें सत्याग्रहकी तवारीख़ के अेक शानदार अध्याय (बाब) की याद दिलाता है। चम्पारनके जन-सत्याग्रहमें गांधीजीसे अुनका पहले-पहल परिचय हुआ था। अुस वक़्त तक हिन्दुस्तानकी राजनीतिमें गांधीजीका अुतना नाम नहीं था और वे अपने ही जैसे अेक अप्रसिद्ध व्यक्ति — राजकुमार शुक्ल — के आग्रहसे चम्पारन गये थे। ज़बरदस्ती नीलकी खेती करानेके अत्याचारी और बदनाम रिवाजके ख़िलाफ़ सब ओरसे आवाज़ अुठ रही थी, क्योंकि अुसने किसानों को नीलकी खेती करनेवाले यूरोपियनोंका अेक तरह से ग़ुलाम ही बना दिया था। यह बुराअी सदियों से चली आ रही थी और अिसके पीछे पूँजीपतियों (सरमायादारों) की ताक़त और गोरोंकी शानका झूठा ख़याल था। मैदानमें अुतरने के पहले गांधीजीने वहाँके आन्दोलनसे सम्बन्ध रखनेवाले मुक़ामी नेताओंसे मशविरा किया। अुनमें स्वर्गीय ब्रजकिशोर बाबूके अलावा श्री राजेन्द्र बाबू भी थे। अुन दिनों वे अपनी वकालत में बहुत नाम कमा चुके थे और हाअीकोर्टकी जजीके लिअे अुनका नाम लिया जाने लगा था। क़रीब आधे दर्जन दूसरे वकील भी थे। ये सब ब्रजकिशोर बाबूको अपना मुखिया मानते थे।

सारी रात की बहसके बाद ब्रजकिशोर बाबूने और अुनके साथियोंने अपने-आपको गांधीजीकी मर्ज़ी पर छोड़ दिया।

गांधीजीने अुनसे कहा–"लेकिन तुम्हें अपनेको वकील या नेता मानना छोड़ना पड़ेगा। तुम्हें नक़लनवीस और दुभाषिया बनना होगा। तुम्हारा ख़ास काम व्याख्या करना और तरजुमा करना होगा।"

अुनकी तरफ़ से ब्रजकिशोर बाबूने कहा–"अिस पर ग़ौर करने के लिअे हमें थोड़ा वक़्त दीजिये।"

दूसरे दिन अुन्होंने गांधीजी को अपना फ़ैसला बता दिया। और वे अुस फ़ैसले से कभी नहीं डिगे। प्रार्थनाके बाद की अपनी तक़रीरमें स्व० ब्रजकिशोर बाबूके बारेमें अपने अूँचे ख़याल ज़ाहिर करते हुअे गांधीजीने कहा–"मैंने अुनके रिश्तेदारों को हमदर्दीका संदेश भेजनेके बजाय अुन्हें भेजे तार में यह लिखा है कि चूँकि दयालु मौतने ब्रजकिशोर बाबूको तकलीफ़ों से छुड़ा दिया है, अिसलिअे आप लोगोंको ख़ुशी मनानी चाहिअे।" गांधीजीने ब्रजकिशोर बाबूकी कभी न डिगनेवाली श्रद्धाका और दृढ़ संकल्पका ज़िक्र किया। "जब अेक बार वे कोअी बात तय कर लेते थे, तो अुसे कभी बदलते न थे, और न कभी पीछे मुड़कर देखते थे।" वे बहुत अूँचे दरजेके व्यवहारकुशल आदमी थे। वे बड़े चतुर राजनीतिज्ञ थे। शायद बिहारभरमें अुनसे ज़्यादा चतुर राजनीतिज्ञ कोअी नहीं था। गांधीजी से मिलनेके पहले ही बड़ी चतुराअी से अेक पार्टीको चलाने में अुन्हें शोहरत हासिल हो चुकी थी। गांधीजीके लिअे अुनमें अपार भक्ति थी। अपनी लड़की प्रभावतीको अुन्होंने श्री जयप्रकाश नारायणके साथ शादी होनेसे पहले ही साबरमती-आश्रम में भेज दिया था। वह तो जैसे गांधीजीकी लड़की ही बन गअी थी। ब्रजकिशोर बाबू बिहारके आसमान में अेक तेज़ चमकते हुअे सितारे थे। अुनकी याद हमेशा बनी रहेगी।

नअी दिल्ली, १८-१०-'४६
(अंग्रेज़ी से)

प्यारेलाल

दर्द

हाल ही अेक दिन अेक दोस्त गांधीजीके साथ कलकत्तेकी पिछली दिल कँपानेवाली वारदातोंके बारेमें बातचीत कर रहे थे। अुनका भावुक और संस्कारी हृदय तंग क़ौमी ख़यालोंको सोच भी नहीं सकता था। कलकत्तेमें लोगोंकी जो प्राणहानि हुअी, अुसके लिअे अुन्हें अफ़सोस हो रहा था, मगर वहाँकी वारदातोंकी वजहसे लोगोंकी अिनसानियत जिस हद तक गिर गअी थी, अुससे तो अुन्हें बेहद रंज हो रहा था। "जो लोग पहले कभी क़ौमी ख़यालसे सोचते न थे, वे अब क़ौमी ज़हनियत रखने लग गये हैं। लेकिन बात यहीं ख़त्म नहीं हो जाती। यह पागलपन तो दिन-दिन फैलता ही जा रहा है।" अुन्होंने कहा।

जब गांधीजी बैठे बंगालकी दर्दभरी कहानियाँ सुन रहे थे, तभी अुन्होंने अपने मनके साथ अेक फ़ैसला कर लिया। अुन्होंने कहा — "अबकी अगर मैं दिल्लीसे जाअूँगा, तो सेवाग्रामके लिअे नहीं, सीधे बंगाल पहुँचनेके लिअे ही जाअूँगा; वरना यहीं रहूँगा और झुरा करूँगा।"

शामको गांधीजीने अिस मामलेमें बंगालके दो मित्रोंकी सलाह ली। मित्रोंने कहा — "पहले हमें वहाँ जाने दीजिये। हम बंगाल जाकर वहाँकी हालतका बयान भेजेंगे। हमें मौक़ा दीजिये कि हम वहां अपने भरसक कुछ करें। बादमें ज़रूरत समझें, तो आप जायँ।" गांधीजी राज़ी हो गये।

अिस बातचीतके दरमियान अेक दोस्तने गांधीजीसे पूछा कि बंगालमें क़ौमी पागलपनकी जो आग धधक अुठी है, क्या अुसे बुझानेके लिअे आप अुपवास करनेकी सलाह देंगे? गांधीजीने कहा — "नहीं"। और बोले — "अहमदाबादके अेक कार्यकर्त्ताने मुझे लिखा था कि अिस मौक़े पर मैं अपनी क़ुरबानी कर दूँ। अुन्होंने मुझे लिखा था कि वे अहिंसक तरीक़ेमें मानते हैं, मगर अुस पर अमल करनेकी ताक़त अुनमें नहीं। 'आपकी मिसाल हमारी डगमगाती श्रद्धाको मज़बूत बनायेगी और हमें बल पहुँचायेगी'। अुनकी बात बिलकुल सही थी और वैसा करनेका लालच भी ज़बरदस्त था। लेकिन मैंने अुसे अपने अूपर हावी न होने दिया और अिनकार किया। अिसके लिअे मुझे अन्दरसे अभी कोअी हुक्म नहीं मिला। जब मिल जायगा, तो कोअी चीज़ मुझे रोक न सकेगी। अिसके बारेमें मैंने अपने मनके साथ दलीलें की हैं। लेकिन यहाँ अुन सब दलीलोंका ज़िक्र करनेकी ज़रूरत नहीं। लोग चाहे मुझे डरपोक कह लें। मुझे विश्वास है कि जब मौक़ा आयेगा, तो भगवान् अुसका सामना करनेकी ताक़त भी मुझे देगा। अुस वक़्त मैं सुस्त नहीं रहूँगा।"

क़ुरबानीका रास्ता

आगे चल कर गांधीजीने कहा — "अुपवास, यंत्र या मशीनकी तरह नहीं किया जा सकता। वह अेक शक्तिशाली चीज़ है। अगर अुसका अिस्तेमाल बिना सोचे-समझे किया जाय, तो वह ख़तरनाक होगा। अुसके लिअे पूरी-पूरी आत्मशुद्धिकी ज़रूरत है। मनमें भी दुश्मनीका ख़याल तक न रख कर मौतका सामना करनेके लिअे जितनी आत्मशुद्धि ज़रूरी है, अुससे कहीं ज़्यादा अिसके लिअे ज़रूरी है। पूर्ण बलिदानकी अेक ही मिसाल सारी दुनियाके लिअे काफ़ी हो सकती है। अीशुकी मिसाल अैसी ही मानी जाती है।"

अिसी सिलसिलेमें गांधीजीने आगे कहा — "अिसकी तहमें ख़याल यह है कि अीशुने आख़िरी भोजनकी रोटी और शराबके प्रतीक द्वारा क़ुरबानीका जो अुसूल सुझाया है, अुसे हम समझें और अपनायें। अेक बिलकुल निर्दोष आदमीने अपने दुश्मनों समेत सबकी भलाअीके लिअे अपनी पूरी क़ुरबानीकी और वह सारी दुनियाका तारनहार बन गया। वह अेक पूरा-पूरा नेक काम था। अीशुके आख़िरी बोल ये थे — 'यह पूरा हुआ है।' और अिसकी सचाअीके लिअे अुसके चार शिष्यों या शागिर्दोंकी गवाही हमारे पास है।

www.vinoba.in

"लेकिन जीससकी यह पुरानी परम्परा तवारीख़ी ख़यालसे सच है या नहीं, अिसकी मुझे परवाह नहीं। मेरे लिअे तो वह तवारीख़से भी ज़्यादा सच है। क्योंकि मैं मानता हूँ कि अैसा हो सकता है, और अिसमें वह सनातन नियम या क़ानून समाया हुआ है, जिसके मुताबिक़ आदमी ख़ुद निर्दोष या बेगुनाह होते हुअे भी दूसरोंके लिअे तकलीफ़ अुठाना पसन्द करता है।"

अिसके बाद गांधीजीने बताया कि आजकी हालतमें अीशुकी मिसालपर किस तरह अमल किया जा सकता है। अुन्होंने कहा— "बम्बअीमें अेक हिन्दू और अेक मुसलमानने पागल बने लोगोंकी भीड़के रोषका सामना किया। वे अेक-दूसरेको गले लगाकर मर मिटे, मगर अुन्होंने अेक-दूसरेको छोड़नेसे क़तअी अिनकार किया। अिसी तरह रजबअली और वसन्तराव हेगिष्टे भी भीड़के अुन्मादको शान्त करनेके लिअे गये और काम आये। शायद लोग पूछेंगे कि 'अिसका नतीजा क्या निकला? आग तो आज भी धधक ही रही है।' मैं नहीं समझता कि ये क़ुरबानियाँ बेकार हुअी हैं। हाँ, यह हो सकता है कि आज हमें अिनका असर न दिखाअी पड़े। हमारी अहिंसा अभी ख़ालिस अहिंसा नहीं बनी है। वह लँगड़ी चालसे चल रही है। फिर भी वह चुपचाप और अदृश्य रीतिसे हिंसाके अुतारका काम कर रही है। ज़्यादातर लोग अिस बातको बहुत कम जानते हैं। लेकिन यही अेक रास्ता है।" अपनी बातको और मज़बूत बनानेके लिअे गांधीजीने चम्पारनके सत्याग्रहके अितिहासकी याद दिलाअी। ज़बरदस्ती नीलकी खेती करानेके बदनाम तरीक़ेके ख़िलाफ़ पचास बरसोंमें कअी बार खूँख़ार बलवे हुअे थे। लेकिन अैसी हरअेक कोशिशके बाद किसानोंके बन्धन और भी मज़बूत बनते गये थे। बादमें हिंसक कार्रवाअियोंसे बिलकुल अलग रहकर किया गया चम्पारनका सामूहिक सत्याग्रह शुरू हुआ, और छह महीनोंके अन्दर ही सौ साल पुरानी बुराअी मिटा दी गअी।

आख़िर में गांधीजीने अुन मित्रोंकी तरफ़ मुख़ातिब होकर कहा— "मैं अपनी बात कह चुका। अब आप अपना काम करनेके लिअे रवाना हो जाअिये। मैं आपको अेक दिन भी ज़्यादा नहीं रोकूँगा। मेरे आशीर्वाद आपके साथ हैं। और मैं कहे देता हूँ कि अगर कल ही मुझे ख़बर मिली कि आप तीनों मारे गये हैं, तो अुससे मेरी आँखोंमें आँसू नहीं आवेंगे, बल्कि मैं ख़ुश होअूँगा।"

तीनों जने अेक साथ कह अुठे — "अिस तरह मौतसे मिलना हमारे लिअे भी सच्चे आनन्दकी बात होगी।"

गांधीजीने फिर कहा — "लेकिन मेरी अेक बात याद रखिये। अगर आप जाते हैं तो अिस ख़यालसे जाअिये कि आप अपना वहाँ जाना ज़रूरी समझते हैं। मेरे कहनेसे न जाअिये। अिस मामलेमें कोअी बेवक़ूफ़ी या हठधर्मी न होनी चाहिये।"

आगकी अुन लपटोंका सामना करनेके लिअे जाते वक़्त बिदा लेते हुअे तीनोंने अेक साथ जवाब दिया — "सो तो है ही।"

अीश्वरके हाथमें

अुस दिन शामकी प्रार्थना-सभामें गांधीजीने कहा — "मेरे पास बंगालसे बहुत सारे संदेशे आये हैं, जिनमें मुझसे कहा गया है कि मैं बंगाल पहुँचूँ और वहाँ जो आग धधक रही है, अुसे बुझाअूँ। मैं नहीं मानता कि मुझमें अैसी कोअी ताक़त है। फिर भी मैं बंगाल जाना तो चाहता ही हूँ। लेकिन मेरा फ़र्ज है कि मैं पण्डित नेहरूके वापस दिल्ली आने तक यहाँ ठहरूँ। फिर भी मैं तो अीश्वरके हाथमें हूँ। अगर मैं यह महसूस करूँ कि मुझे किसीके लिअे ठहरनेकी ज़रूरत नहीं, तो मैं अुससे पहले जानेमें भी नहीं हिचकिचाअूँगा। मेरा दिल तो बंगालमें ही है।"

नअी दिल्ली, १८-१०-'४६
(अंग्रेजीसे)

प्यारेलाल

मैं हारा

अप्रमाणित खादी के बारेमें मुझ पर ख़तोंकी बौछार-सी हो रही है। ख़त भी जाने-पहचाने और अनुभवी लोगोंके हैं। मुझे अपनी दलीलमें कोअी दोष नज़र नहीं आता। मेरी हार अिस बातमें है कि अप्रमाणित खादी बहुत ज़्यादा है। लेकिन सच्ची या प्रामाणिक खादी कहीं ढूँढ़े नहीं मिलती। अगर यह सच है, तो मुझे अपनी बात वापस ले लेनी चाहिये, और मैं लिये लेता हूँ।

यहाँ यह समझ लेना ज़रूरी है कि हार किस बात में है। मुझे अिसमें शक नहीं कि प्रामाणिक खादी अप्रमाणित होने पर भी मिलके कपड़े से बढ़कर है। किसीको अिसमें कोअी शक नहीं। लेकिन मित्र मेरी बातका मज़ाक अुड़ाते हैं, क्योंकि प्रमाणित खादी सब अंकित है। जो बाज़ारमें मिलती है, वह नक़ली खादी है। अुसमें मिलावट है, दग़ा है, और निरी लूट मचाने की नीयत है। अैसी खादी तो मिलके कपड़े के बराबर ही मानी जा सकती है। मुझे यह मंज़ूर कर लेना चाहिये। मुझे विश्वास करने लायक़ ज़रियोंसे ख़बर मिली है कि कुछ लुटेरे व्यापारी मेरे लेखे के सहारे अपनी लूट बढ़ा सके हैं। अिसलिअे मैं अुम्मीद करता हूँ कि अब खादी ख़रीदनेवाले तो प्रमाणित खादी-भण्डार में ही जायँगे, और वहींसे खादी ख़रीदेंगे। भूले-चूके भी कोअी अप्रमाणित खादी-भण्डारमें न जायगा।

जो यह साबित कर सकेंगे कि वे कात नहीं सकते, अुन्हें मित्र समझकर मैं अुनसे सूत मिलनेका प्रमाण-पत्र देनेको तैयार हूँ, क्योंकि मेरे पास सूतका ढेर लगता ही रहता है।

नअी दिल्ली, १५-१०-'४६
(गुजरातीसे)

मोहनदास करमचंद गांधी

कांग्रेसका अगला जलसा

कुछ ही दिन बाद मेरठमें होनेवाले कांग्रेसके सालाना जलसेके बारेमें मेरे पास बेशुमार ख़त आये हैं। ख़त लिखनेवालोंने जलसेके सिलसिलेमें होनेवाली अुस फ़ज़ूल ख़र्चीकी शिकायत की है, जिसकी ख़बरें अख़बारोंमें छपी हैं। स्वागत-समितिके कामके बारेमें मुझे अपनी ओरसे कोअी फ़ैसला नहीं देना चाहिये। अिस बारेमें हक़ीक़तोंका अभ्यास करनेकी न तो मेरी ख़ाहिश है, और न मेरे पास अुतना वक़्त ही है। लेकिन हक़ीक़तों और आँकड़ोंको बिना जाने भी मैं नीचे लिखी बात कह सकता हूँ। मुमकिन है, अुससे कमेटीको कुछ मदद मिले।

जलसेमें किसी क़िस्मके तमाशे नहीं होने चाहियें। कांग्रेसका जलसा हमेशा अेक संजीदा चीज़ समझी जानी चाहिये, और अुसका काम-काज भी वैसी ही संजीदगीके साथ किया जाना चाहिये। वहाँ अलगसे कोअी तमाशा या दिखावा नहीं किया जा सकता। जलसेके लिअे लोगोंको आकर्षित करनेकी कोअी कोशिश नहीं की जानी चाहिये। कांग्रेसके जलसेका होना ही अपने-आपमें अेक ख़ासा आकर्षण या खिंचाव होना चाहिये।

जलसेमें किसी तरहकी रोशनी न की जाय। लोगोंको सादे-से-सादा खाना दिया जाय, और अुसके बनानेमें तेल, घी या शक्करका कम-से-कम या बिलकुल अिस्तेमाल न किया जाय। बिना न्योते मेहमान अपना सीधा-सामान अपने साथ ले जायँ, या जलसेमें जानेका ख़याल छोड़ दें।

सफ़ाअीका अिन्तज़ाम अितना अच्छा और माक़ूल होना चाहिये कि जिससे जलसेमें आनेवाले सब लोग कुछ सीख कर जायँ।

तमाशबीनोंको जलसेमें न जानेकी ही सलाह दी जाय।

नअी दिल्ली, १९-१०-'४६
(अंग्रेजीसे)

मोहनदास करमचंद गांधी

www.vinoba.in

टिप्पणियाँ

आँसू क्यों ?

किसी मौक़ेसे लिखे अपने अेक ख़तमें प्रिन्सिपल सतीश कालेलकरने अेक दिलचस्प और पुरराज़, यानी सरस और रहस्यमय, बात लिखी है। अिस ख़यालसे कि शायद वह 'हरिजनसेवक' पढ़नेवालोंके काम आयेगी, अुसे नीचे देता हूँ —

"अेक बार डॉक्टर वेलिंग्टन कूने लन्दनमें अेक चीनी परिवारकी बहुत मीठी कहानी सुनाअी थी। चीनी घरोंमें घरका सबसे बड़ा आदमी घरका मुखिया भी होता है। अुसे घरमें सज़ा देनेके लिअे ख़ास तौर पर रक्खी गअी पीढ़ियों पुरानी अेक छड़ीका अिस्तेमाल करनेका हक़ होता है। अेक दफ़ा सौ सालके अेक बुज़ुर्ग मुखिया पचहत्तर सालके अपने बेटेकी पीठ पर, कुल-देवताके सामने, बतौर सज़ाके, छड़ी मारने लगे। बेटेकी आँखसे आँसू बह चले। मुखियाने पूछा — 'किसी दिन नहीं, और आज ही तुम्हारी आँखमें आँसू क्यों आये?' अिस पर ७५ सालके बेटेने कहा — 'पिताजी, आपकी छड़ी अब पहलेकी तरह लगती नहीं। आप बूढ़े और कमज़ोर हो गये हैं। अिस ख़यालने मुझे बेचैन बना दिया और मेरी आँखें बरस पड़ीं'।"

जिन दिनों यह ख़त मिला, काका साहब कालेलकर दिल्लीमें ही थे। मैंने अुन्हें यह ख़त पढ़नेको दिया। अुन्होंने कहा — "हमारे देशमें भी अैसे क़िस्से हुअे हैं, और आज भी होते होंगे।" जो क़िस्सा अुन्होंने सुनाया, वह यों था —

"मद्रास हाअीकोर्टके अेक जज अेक दिन अपना काम पूरा करके सीधे घर जानेके बदले अेक दोस्तके साथ कहीं चले गये और देरसे घर पहुँचे। दरवाज़ेमें अुनकी माँ खड़ी थीं। माँने पूछा — 'देरसे क्यों आया?' और बेटेको अेक तमाचा जड़ दिया। बेटेकी आँखसे चौधार आँसू बरसने लगे।

"दोस्तने कहा — 'अिस अुमरमें और अितनी अिज़्ज़त हासिल करनेके बावजूद माँका आपको अिस तरह तमाचा मारना अेक अजीब बात है। स्वाभाविक है कि आपको यह अपमान-सा मालूम हो।'

"ज़जने कहा — 'अिसमें अपमानकी कोअी बात नहीं। अैसी चपतें मुझे बीच-बीचमें मिला करती हैं। मैं अिसे अपना सौभाग्य समझता हूँ। आज आँखोंमें आँसू आनेकी वजह तो यह है कि माँके तमाचे अब पहलेकी तरह लगते नहीं। मुझे दुःख है कि मेरी माँ कमज़ोर हो गअी हैं'।"

नअी दिल्ली, १८-१०-'४६

(गुजरातीसे)

दीवाली और पटाख़े

मेरे पास कुछ ख़त आये हैं, जिनमें दीवाली पर पटाख़े छोड़नेके रिवाजकी शिकायत की गअी है। शिकायत सच्ची है। मैं तो अिसके बारेमें 'नवजीवन'में भी लिख चुका हूँ। मैं नहीं जानता कि किसी पर अुसका असर भी हुआ है या नहीं। अिस वक़्त जब चारों तरफ़ होली जल रही है, तब दीवाली पर पटाख़े छोड़ना, या घी और तेलके या बिजलीके दीये जलाना या मिठाअी वग़ैरा खाना हराम समझा जाना चाहिये।

डाकोरका क्या ?

खेड़ा ज़िलेके अेक भाअी, जो बिना किसी झिझकके भंगी स्त्री-पुरुषोंको अपने घरमें सगे भाअी-बहनोंकी तरह रखते हैं, पूछते हैं — "मद्रासमें बड़े-बड़े मन्दिर हरिजनोंके लिअे खुल गये हैं, मगर पागल गुजरात अेक डाकोरजीका मन्दिर भी नहीं खोलता, यह कैसी बात है?" अगर पागल गुजरातके भाअी-बहन समझदार बन जायँ, तो आज ही वह मन्दिर खुल सकता है। लेकिन गुजरातको शरमकी टोकरी ही अुठानी हो, तो अुसे कौन रोक सकता है?

अिस मन्दिरके ट्रस्टियोंके सिर बहुत बड़ी ज़िम्मेदारी है।

(गुजरातीसे) मो० क० गांधी

चरखा-मण्डल

१. अिस चरखा-मण्डल के सदस्यों को सालमें ६ गुण्डी सूत यानी हर महीने ३२० तार सूत देना होगा। शर्त यह रहेगी कि यह सूत चरखा-मण्डल द्वारा जो दिन मुक़र्रर किया जाय, अुस दिन सामूहिक और सम्पूर्ण यानी मजमूअी और मुकम्मल कताअी (तुनाअी से पूनी बनाकर) की शक़्ल में काता जाय, और मण्डल को दिया जाय। अैसे सदस्य या मेम्बर मण्डल के सहयोगी सदस्य कहलायेंगे।

२. चरखा-मण्डल के सहयोगी सदस्य बनते समय दाख़िल होने की फीसका अेक रुपया और हर महीने ३२० तार सूत देना होगा। जब तक सदस्य अिस तरह कता सूत हर महीने देते रहेंगे, वे मण्डल के सहयोगी सदस्य बने रहेंगे।

३. महीने में कब और कितने दिन सामूहिक कताअी हो, अिसके लिअे ज़रूरी नियम और क़ानून मुक़ामी मण्डल ख़ुद बना लेंगे। लगातार दो महीनों तक ३२० तार न दे सकनेवाले सदस्य का नाम मण्डल की सदस्य-सूची से निकाल दिया जायगा। अगर अैसे सज्जन फिर सहयोगी बनना चाहेंगे, तो अुन्हें दाख़िल होने की फीस दुबारा देनी होगी। अिस तरह किसी को अेक साल में तीन बार सदस्य न बनाया जायगा।

४. अिस बात की कोशिश की जायगी कि शहरों के मुहल्लों में, गाँवोंमें और क़स्बोंमें अैसे मण्डल खुलें। अिन मण्डलों का ज़िलेवार या सूबेवार अेक-अेक केन्द्रीय दफ़्तर क़ायम किया जा सकेगा।

५. अिरादा यह है कि हम सारे मुल्क के लिअे साल में बारह अैसे राष्ट्रीय दिन तय करें, जब अिन मण्डलों में महीने में अेक दिन अेक ही वक़्त सब जगह सामूहिक और सम्पूर्ण कताअी की जाय।

६. कोशिश यह रहेगी कि चरखा-मण्डल के साथ जगह-जगह अेक-अेक चरखा-क्लास भी खोला जाय। अुसमें कपास की तुनाअी से कताअी तक की सब क्रियायें सिखाअी जायँगी। अिसकी फीस अेक रुपया रखी जायगी। जो लोग अिस क्लास में कताअी सीखकर अेक महीने के अन्दर चरखा-मण्डल में अपना नाम लिखवा लेंगे, अुन्हें मण्डल के लिअे अलग से प्रवेश फीस नहीं देनी होगी। वे हर महीने ३२० तार सूत देकर मण्डल के सहयोगी सदस्य बन सकेंगे।

७. अगरचे चन्दे का यह सूत चरखा-मण्डल का रहेगा, तो भी अिस सूत पर सदस्यों को सूत के हिसाब से खादी मिल सकेगी। सहयोगी सदस्य को खादी ख़रीदने का पहला हक़ होगा।

कनु गांधी

[भंगी-बस्ती में तुनाअी और कताअी का जो क्लास तीन बार चला, यह मण्डल अुसीका नतीजा है। काश, अैसे मण्डल हरअेक हलक़े में बनें! अिससे पहले वे दिल्ली में जगह-जगह बनने चाहियें, और बराबर चलने चाहियें। खेल-कूद के बहुत-से क्लब बनते हैं। काम के मण्डल यानी अंजुमन क्यों न बनें? मो० क० गांधी]

नअी दिल्ली, १८-१०-'४६

www.vinoba.in

बोलनेवाले आँकड़े

जब मद्रासके प्रॉविन्शियल टेक्सटाअिल कमिश्नर श्री अेस० वेंकटेश्वरन् मद्रासकी खादी-योजना (स्कीम)के बारेमें बातचीत करनेके लिअे दिल्ली आये थे, तब मैंने अुनसे कहा था कि आप यह मानकर अपने आँकड़े बताअिये कि मद्रासमें कोअी मिलें नहीं हैं, और सारे सूबेको खादी पहनानी है।

नीचे वे आँकड़े दिये जाते हैं, जो अपनी कहानी खुद कहते हैं—

"मद्रास सूबेकी आबादी	५ करोड़ ३० लाख
सूबेके कुनबोंकी तादाद $\frac{५३,०००,०००}{४}$	१ करोड़ ३० लाख २५ हज़ार
रोज़ अेक घण्टा कात कर अेक कातनेवाला जितना सूत कात सकता है	$\frac{३}{८}$ गुण्डी
अेक कुनबेमें अेक महीने (३० दिन)में कुल सूत कतेगा (यह मानकर कि घरमें अेक ही आदमी कातनेवाला है) $\frac{३}{८}\times\frac{३०}{१}=\frac{९०}{८}$	$११\frac{१}{४}$ गुण्डी
१२ महीनोंमें अेक कुनबेमें कुल सूत कतेगा=$१२\times ११\frac{१}{४}$	१३५ गुण्डी=$९\frac{६}{१४}$=९·६४ पौंड या क़रीब १० पौंड जिससे ४५" अर्ज़का क़रीब ३० गज़ कपड़ा बनेगा।
पूरे सूबेमें कुल खादी पैदा होगी	३०×१३·२५ लाख=३९७·५ लाख गज़
२० गज़ फ़ी आदमी और १० गज़ फ़ी बच्चेके हिसाबसे समूचे सूबेका पहनानेके लिअे खादीकी ज़रूरत	

३७० लाख×२०=७४०० लाख
१६० लाख×१०=१६०० लाख
९००० लाख गज़

कपड़ेकी ज़रूरतके मुक़ाबले पैदावारकी औसत	४४·१%

"अिससे पता चलता है कि कपड़ेकी ज़रूरतको पूरा करनेके लिअे हमें तब तक काफ़ी हाथ-कता सूत नहीं मिल सकता, जब तक हर परिवारका औसतन् अेक आदमी क़रीब $२\frac{१}{४}$ घण्टे न काते या हर दो परिवार पीछे ५ आदमी कातनेवाले न मिलें।

"करघोंकी ज़रूरी तादाद—यह मानकर कि अेक औसत जुलाहा ज़रूरी ट्रेनिंगके बाद भी रोज़ ५ गज़ या महीनेमें १२५ गज़से ज़्यादा नहीं बुन सकता, (महीनेमें ५ दिन त्योहार या आराम वग़ैराके निकालकर), ९,००० लाख गज़ कपड़ा बुननेके लिअे ६,००,००० करघोंकी ज़रूरत होगी। अभी सूती कपड़ा बुननेके लिअे सूबेमें ५ लाखसे कुछ अूपर करघे चल रहे हैं। अिसलिअे खादीके मामलेमें सूबेको स्वावलम्बी बनानेके लिअे कम-से-कम ७५,००० करघोंकी और ज़रूरत होगी।"

तो क्या हर आठ आदमी पीछे ५ आदमी और किसी ग़रज़से नहीं तो सिर्फ़ अपनी मातृभूमिके प्रेमकी ख़ातिर ही १ घण्टा रोज़ाना कातें, अैसी अुम्मीद करना बहुत ज़्यादा होगा?

नअी दिल्ली, १८-१०-'४६

(अंग्रेज़ीसे) मोहनदास करमचंद गांधी

www.vinoba.in

हरिजनोंके लिअे क्या कीजियेगा?

अेक भाअीने नीचे लिखा करुणाजनक (रहम पैदा करनेवाला) ख़त भेजा है—

"छुआछूत दूर करनेके बारेमें लोगोंने हमारी बात जितनी अपनानी चाहिये, नहीं अपनायी। अुसकी वजह या तो यह है कि यह काम सबसे ज़्यादा मुश्किल है, या फिर हमारे काम करनेके तरीक़ेमें कुछ फेरफार करनेकी ज़रूरत है।

"हरिजन — भंगी — अितने गिरे हुअे और अितने दबे हुअे हैं कि अुन्हें अुठानेके लिअे सवर्णोंको और हुकूमतको बहुत-कुछ करनेकी ज़रूरत है।

"काठियावाड़के कअी गाँवों और शहरोंमें अुनकी हालत कंगाल और करुणाजनक है। अक्सर अुनकी तनख़्वाह अितनी कम होती है कि पकाया हुआ, बचा हुआ, अच्छा या जूठा खाना अुन्हें न मिले, तो वे ज़रूर भूखों मर जायँ।

"अुनके बदन पर कपड़ोंकी जगह चिथड़े होते हैं। अुनके रहनेके घर भी रोग और गंदगीसे भरे रहते हैं। कोअी सहायक धन्धा या रोज़गार अुन्हें मुश्किलसे ही मिलता है। अूँची जातवाले अुनके साथ कोअी ब्यौहार रखना ही नहीं चाहते। हरिजन—भंगी—ख़ुद भी आलसी, अहदी, व्यसनी और पामर बन गये हैं। अिन सब बुराअियोंको मिटानेके लिअे ज़बरदस्त कोशिश की जानी चाहिये।

"कार्यकर्त्ता भी अिस ख़यालसे परेशान रहते होंगे कि अिस मुश्किल कामको कैसे आगे बढ़ाया जाय? मगर अिस काममें तेज़ी लानेके लिअे हमें क्रान्तिकारी या अिन्क़िलाबी क़दम अुठानेकी सख़्त ज़रूरत है।

"आप 'हरिजनबंधु'में यह बतानेकी मेहरबानी करें कि हरिजनोंके लिअे पीनेके पानीका, सहायक धन्धोंका, और शिक्षा व संस्कार वग़ैराका अिन्तज़ाम करनेके लिअे हमें अपनी नीति और काम करनेके तरीक़ोंमें क्या फेरफार करनेकी ज़रूरत है।"

बात सच है। ख़त लिखनेवाले ख़ुद अेक हरिजन-सेवक हैं। जब धर्मके नाम पर पाखंड चलता है, तब सुधार करना बहुत मुश्किल हो जाता है। यह हम क़दम-क़दम पर देख रहे हैं। तिसपर हम भीरु या डरपोक ठहरे। मुझे तो अेक ही सीधा रास्ता नज़र आता है। जिसने सचको देख लिया है, वह ख़ुद अपने आचरण या अमलसे अुसे बराबर प्रगट करता रहे, और साथ ही विरोधीकी तरफ़ अुदारता रखे। धीरज न छोड़े और अपना काम करता हुआ आनंदमें मगन रहे।

(गुजरातीसे) मोहनदास करमचंद गांधी

विषय-सूची

		पृष्ठ
हफ़्तेवार ख़त	... प्यारेलाल	३६५
अ० भा० चरखा-संघके प्रस्ताव	...	३६७
हाथ-कता बनाम मिलका कपड़ा	... गांधीजी	३६८
हिंसाके तरीक़े	... गांधीजी	३६८
ब्रजकिशोर बाबू	... प्यारेलाल	३६९
दर्द	... प्यारेलाल	३६९
मैं हारा	... गांधीजी	३७०
कांग्रेसका अगला जलसा	... गांधीजी	३७०
चरखा-मण्डल	... कनु गांधी	३७१
बोलनेवाले आँकड़े	... गांधीजी	३७२
हरिजनोंके लिअे क्या कीजियेगा?	... गांधीजी	३७२
टिप्पणियाँ		
ग़लत बायकाटका सामना कैसे करें?	... मो० क० गांधी	३६७
आँसू क्यों?	... मो० क० गांधी	३७१
दीवाली और पटाखे	... मो० क० गांधी	३७१
डाकोरका क्या?	... मो० क० गांधी	३७१